राष्ट्रीय

# राजनीतिक तानाशाही का सबूत हैं कानपुर और नंदीग्राम की घटनाएं

**यूसुफ किरमानी**

भाजपाई ममता के जीवट का इम्तेहान लेने बंगाल जा पहुंचे हैं

**तीन** घटनाएं एकसाथ हुई हैं, जो आपसे में न जुड़ते हुए भी जुड़ी हुई हैं। पहली घटना- कानपुर के सजेती गांव में एक नाबालिग लड़की घर से बाहर निकलती है तो एक दरोगा का बेटा और उसके दोस्त उसका अपहरण कर लेते हैं। लड़की किसी तरह वापस घर लौटती है और बताती है कि उसके साथ गैंगरेप हुआ है। उसका पिता थाने जाकर दरोगा और उसके बेटे के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराने की कोशिश करता है तो अगले दिन उसे एक ट्रक कुचल देता है और उसकी मौत हो जाती है।

दूसरी घटना – बंगाल के नंदीग्राम में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर चुनाव प्रचार के दौरान जानलेवा हमला होता है। शरीर में कई जगहों पर गंभीर चोट लगी है। हमले का आरोप भाजपा पर लगता है।

तीसरी घटना – स्वीडन की गोथेनबर्ग यूनिवर्सिटी के वी- डेम इंस्टीट्यूट की एक रिपोर्ट गुरुवार को सामने आती है जिसमें कहा गया है कि भारत अब दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र नहीं है बल्कि वह एक राजनीतिक तानाशाही वाला देश है।

पहली घटना में ताजा इतिहास दोहराया गया। भाजपा के पूर्व विधायक कुलदीप सिंह सेंगर मामले में जिस लड़की ने रेप का आरोप लगाया था, उस मामले में भी लड़की के परिवार के कई लोगों को एक सड़क हादसे में जान से हाथ धोना पड़ा था। वह सड़क दुर्घटना जानबूझकर कराई गई थी। अब ठीक उसी तरह की घटना फिर कानपुर जिले में हुई। न कहानी बदली न किरदार बदले। उसमें पूर्व विधायक रसूखदार था तो इस घटना में दरोगा रसूखदार है। दिल्ली, मुम्बई, चेन्नै, कोलकाता जैसे महानगरों में रहने वाले जानते होंगे कि छोटे शहरों में किसी दरोगा की क्या हैसियत होती है।

जिस यूपी में आरोप लगाने वाले को ही रास्ते हटा दिया जाए, उस प्रदेश का सीएम बंगाल में जाकर वहां की कानून व्यवस्था को बदतर बताता है। जिस प्रदेश में हर घंटे हत्या और बलात्कार होते हों, वहां का मुख्यमंत्री बंगाल में घड़ियाली आंसू बहाता है। देश का प्रधानमंत्री जो बनारस से सांसद है, यूपी में अपराध की किसी भी घटना का संज्ञान तक नहीं लेता है जबकि इन्हें बिहार में जंगलराज की बात करते हुए अक्सर देखा जा सकता है।

दूसरी घटना कथित भारतीय लोकतंत्र के लिए भी बड़ा झटका है। राजनीति में दोस्ती-दुश्मनी की सीमाएं पहले से ही तय हैं लेकिन मोदी के नेतृत्व में भाजपा वो तेवर बदलने के लिए बेकरार है। बंगाल की सीएम ममता बनर्जी पर जानलेवा हमला राजनीतिक दुश्मनी में हद से गुजर जाने की पराकाष्ठा है। मोदी की भाजपा ने गांधी परिवार पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाकर सत्ता हथियाई थी। उम्मीद थी कि बड़े पैमाने पर गांधी परिवार के लोग और मनमोहन सरकार में मंत्री रहे नेता जेल भेजे जाएंगे। लेकिन इसके बजाय हमने क्या देखा, तमाम संगीन आरोपों के बावजूद सोनिया गांधी के दामाद रॉबर्ड वाड्रा को भाजपा की कोई राज्य सरकार छू तक नहीं सकी। यही हाल बंगाल में भी है। ममता पर जितने आरोप भाजपाइयों ने लगाए, उतने तो वामपंथियों ने भी नहीं लगाए लेकिन ममता के खिलाफ केन्द्र सरकार कुछ नहीं कर पाया। भाजपाई इस काम में माहिर हैं कि जब वो केन्द्रीय जांच एजेंसियों की मदद लेकर भी कुछ नहीं कर पाते तो वो किसी भी सीमा तक जाकर कीचड़ उछालते हैं। लेकिन बंगाल में तो एक महिला सीएम पर हमला किया गया।

मोदी की भाजपा के लोग जानते हैं कि ममता को हराना आसान नहीं है। जिस ममता ने गांधी परिवार को चुनौती देते हुए पार्टी छोड़ दी और बंगाल में अपनी सरकार भी बनाकर दिखा दी, वो मामूली संघर्षों से होकर नहीं गुजरी है। बंगाल में लंबे समय तक या तो कांग्रेस या फिर वामपंथियों का कब्जा रहा है। उसमें ममता जैसी जीवट की महिला ही सेंध लगा सकती थी। लेकिन भाजपाई उसके जीवट का इम्तेहान लेने बंगाल जा पहुंचे हैं। किसी भी राज्य के सीएम पर हमला होना और प्रधानमंत्री व गृहमंत्री का उस सीएम की कुशलक्षेम न पूछना क्या बताता है। मोदी की भाजपा ने बंगाल में लोकतंत्र को रौंदने की कोशिश की है। चुनाव आयोग जितना हस्तक्षेप बंगाल में कर रहा है, उतना वो किसी राज्य में नहीं कर रहा है। आयोग ने वहां के सारे अधिकारी बदल दिए। राज्य से चर्चा किए बिना वहां का डीजीपी बदल दिया। डीजीपी बदलने के फौरन बाद बंगाल के प्रदेश भाजपा अध्यक्ष दिलीप घोष का बयान आता है कि अब देखिए बंगाल में शाम को पांच बजे के बाद क्या होता है। ठीक एक घंटे बाद ममता बनर्जी पर जानलेवा हमला किया जाता है। इस क्रोनॉलजी को भला कौन नहीं समझ सकता। इसके लिए कोई टूलकिट भी बनाने की जरूरत नहीं है। मोदी की भाजपा के लोग ममता बनर्जी पर भ्रष्टाचार, भाई भतीजावाद, निरंकुशता के चाहे जितने आरोप लगा लें, वहां तक सभी को अपनी बात कहने का अधिकार है लेकिन अगर सरकारी एजेंसियों की मदद लेकर वहां चुनाव जीतने की कोशिश की जाएगी तो वहां खेला तो होबै। सरकारी एजेंसियां लोकतंत्र को रौंद कर भाजपा को सत्ता तो दिला सकती हैं लेकिन वो ममता या लालू की लोकप्रियता को कम नहीं कर सकतीं। ममता बिना किसी विवाद के बंगाल की सबसे लोकप्रिय नेता हैं। आप ममता बनर्जी के राजनीतिक विरोधी जरूर बनिए और होना भी चाहिए लेकिन उसके लिए लोकतंत्र का गला घोंटने पर विरोध का सामना तो करना ही पड़ेगा।

तीसरी घटना वी-डेम इंस्टीट्यूट की वो रिपोर्ट है, जिसका संबंध भारत में कदम-कदम पर लोकतंत्र का अपहरण किए जाने, उसे कूड़ेदान में फेंकने को लेकर है। कानपुर और बंगाल में हो रही घटनाएं ऐसी रिपोर्ट के लिए जिम्मेदार हैं। स्वीडन भारत का शत्रु देश नहीं है। गोथेनबर्ग यूनिवर्सिटी का भारत में किसी तरह का कोई स्टेक नहीं है। इसलिए जब वह भारत में लोकतंत्र को दफन किए जाने पर अपनी रिपोर्ट जारी कर रही है तो उस पर मनन करना हर भारतीय का कर्तव्य है। आप वी-डेम रिपोर्ट को ऐसे ही खारिज नहीं कर सकते। आप इसे इसलिए भी खारिज नहीं कर सकते कि स्वीडन जैसे छोटे से देश की भारत के सामने औकात क्या है। औकात तो भारत के सामने क्यूबा की भी नहीं है लेकिन अमेरिकी और ब्रिटिश आज भी भारत के मुकाबले क्यूबा को ज्यादा सम्मान से क्यों देखते हैं। अमेरिका की कोई अनाम संस्था भी अगर मोदी को सम्मानित कर दे तो भारत में मोदी की भाजपा के लोग उसे ऐसे प्रचारित करते हैं जैसे मोदी को नोबेल पुरस्कार मिल गया है। लेकिन यही भाजपाई स्वीडन की मशहूर यूनिवर्सिटी गोथेनबर्ग की रिपोर्ट का महत्व स्वीकार करने को तैयार नहीं है।

हाल ही में मोदी को अमेरिका की एक संस्था ने पर्यावरण व ऊर्जा संरक्षण के लिए सम्मानित किया है। भारत में इसका इतना शोर मचा कि जैसे कोई बहुत बड़ा पुरस्कार दिया गया हो। यह वही भारत है जहां किसान आंदोलन का समर्थन करने वाली पर्यावरणवादी लड़की ग्रेटा थनबर्ग के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई और प्रधानमंत्री मोदी चुपचाप तमाशा देखते रहे। आज मोदी किस मुंह से किसी अमेरिकी संस्था का पर्यावरण संरक्षण के लिए पुरस्कार स्वीकार कर रहे हैं। हर भारतीय जानता है कि ग्रेटा थनबर्ग के खिलाफ दिल्ली के किसी थाने में एफआईआर दर्ज करने से उस लड़की का बाल बांका भी नहीं कर पाएंगे। दिल्ली पुलिस और भारत सरकार की इतनी औकात नहीं है कि वो ग्रेटा थनबर्ग के खिलाफ इंटरपोल की मदद भी मांग ले। अगर भारत सरकार में हिम्मत है तो वह स्वीडन सरकार से ग्रेटा को पूछताछ के लिए उसके हवाले करने को कहे।

वी-डेम रिपोर्ट ने भारत के लिए राजनीतिक तानाशाही का शब्द इसीलिए इस्तेमाल किया कि उसने लोकतंत्र को रौंदकर ग्रेटा थनबर्ग के खिलाफ एफआईआर की। उसने दिशारवि को गिरफ्तार किया। उसने महिला वकील सुधा भारद्वाज, कवि वरवरा राव, पत्रकार गौतम नवलखा, एक्टीविस्ट उमर खालिद समेत न जाने कितनों को जेल में डाला हुआ है। अगर गोथेनबर्ग यूनिवर्सिटी को भारत में लोकतंत्र खतरे में नजर आ रहा है तो इसमें किसी भी भारतीय को हैरान नहीं होना चाहिए।

**आप व्यक्तिगत रूप से मजे में हो सकते हैं लेकिन आपकी आजादी वाकई खतरे में है। अगर आपके बारे में कोई सरकार हर तरह की सूचना अपने पास रखना चाहती है तो आप उससे बेहतरी की उम्मीद मत रखिए। कानपुर की घटनाएं हों, योगी की हरकतें हों या फिर ममता बनर्जी पर हमला हो, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं की गैरकानूनी गिरफ्तारियां भारतीय लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत नहीं है।**

**( वरिष्ठ पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक )**

# मोदीराज में गोबर चेतना का विकास

**गिरीश मालवीय**

**प्र**धानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनकी बीजेपी सरकार से अनुरोध है कि संविधान की प्रस्तावना में दिए गए 'सेक्युलर' शब्द को बाद मे बदलिएगा, पहले अनुच्छेद 51 ए (एच) में दिए गए शब्द 'वैज्ञानिक चेतना' को बदलकर उसकी जगह 'गोबर चेतना' शब्द को डलवा दीजिए...।

हमे कितना अच्छा लगेगा !..कितनी गर्व की भावना हमारे अंदर आएगी जब जब हमारे भारत देश के बच्चे पढ़ेंगे कि नागरिक का मूल कर्तव्य है- 'गोबर चेतना' का विकास।

जब से मोदी सरकार आई है, बीजेपी से जुड़े लोगों को 'गोबर' से कुछ विशेष प्रेम उमड़ रहा है। सोमवार को मध्यप्रदेश की संस्कृति मंत्री उषा ठाकुर ने गोबर से घर को सेनेटाइज करने का अनोखा आइडिया दिया। उन्होंने कहा कि 'आप गाय के दूध से बने घी में अक्षत मिलाकर रखें। अगर आप सूर्योदय और सूर्यास्त के वक्त गाय के ही गोबर के कंडे पर हवन के दौरान इस घी की दो आहुतियां डालें, तो आप यकीन मानिए कि आपका घर 12 घंटे तक सेनेटाइज (संक्रमणमुक्त) रहने वाला है।' ..बाद में उन्होंने अपनी इस बात को मनवाने के लिए इसे विज्ञान का नाम भी दिया उन्होंने कहा कि 'घर को संक्रमणमुक्त रखने का यह नुस्खा मनगढ़ंत नहीं है'।

उन्होंने कहा, 'यह विज्ञान है कि भगवान सूर्य जब आकाश पर उदित या अस्त होते हैं, तो गुरुत्वाकर्षण शक्ति 20 गुना तक बढ़ जाती है। शाम को ऑक्सीजन कम होती है, इस समय यदि हमें ऑक्सीजन की प्रचुर मात्रा चाहिए, तो घी की ये दो आहुतियां इस प्रचुरता को सम्पूर्ण पर्यावरण में व्याप्त कर देती हैं।'

जब गोबर महात्म्य को ही आपको विज्ञान मानना है तो यही बेहतर होगा कि बच्चों को प्राथमिक कक्षाओं में ही 'सामान्य विज्ञान' की जगह गोबर विज्ञान की शिक्षा दे...इससे हमारे राष्ट्रीय गर्व की भावना में दोगुनी चौगुनी वृद्धि होगी।

आपने हर चीज में गोबर को घुसा दिया है ...पेट्रोल डीजल के दाम बढ़ रहे हैं तो देश की टैक्सपेयर जनता के पैसो से बना राष्ट्रीय गौ आयोग ने लोगों को नसीहत दे रहा है कि

गाय के गोबर से बनी नैचुरल गैस (सीएनजी) का इस्तेमाल करें। इससे भारत के लोगों को सस्ता और मेड़ इन इंडिया फ्यूल मिलेगा...।

उन्होंने जो पेपर प्रकाशित किया है उसमें लिखा है कि अगर कुकिंग के लिए बायोगैस कारगर है तो ट्रांसपोर्ट में भी गोबर से मिली ऊर्जा का इस्तेमाल किया जा सकता है। अगर बड़े पैमाने पर इसका प्रोडक्शन किया जाए तो सीएनजी पंप भी लगाए जा सकते हैं। इससे ट्रांसपोर्ट इंडस्ट्री को सस्ता फ्यूल मिलेगा और देश में एक नया उद्योग जन्म लेगा।

बताइये !..क्या बेहतरीन आइडिया है !..आम के आम और गुठलियों के दाम ...गाय का भी सरंक्षण हो जाए और गोबर का भी उपयोग हो जाए, ओर एक पूरी तरह से नया ओर अनोखा उद्योग भी जन्म ले ले, दुनिया के जाने माने इंस्टीट्यूट जैसे हार्वड, कोलम्बिया, कैम्ब्रिज आदि संस्थान के लोग आए और केस स्टडी करे....इससे बेहतर कोई क्या सोचेगा ?...

वैसे ये लोग इतने पर भी कहां माने हैं? उसने तो एक ओर कमाल का आइडिया दिया था...

6 महीने पहले राष्ट्रीय कामधेनु आयोग के चेयरमैन ने गोबर से बनी एक चिप लॉन्च की ... उनका कहना है कि ये चिप मोबाइल से निकलने वाले रेडिएशन को रोकती है और इसके साथ-साथ बीमारियों की रोकथाम करती है। इस चिप का नाम गौसत्व कवच है।

ये एक रेडिएशन चिप है, जिसे मोबाइल फोन में इस्तेमाल किया जा सकता है, ताकि रेडिएशन कम किया जा सके। चेयरमैन साहब ने बताया है कि देशभर में क़रीब 500 से ज़्यादा गौशालाओं में अब यह चिप बन रही है।

बताइये आप !.. यह तो हालात हैं इस देश मे... आज के दौर में यदि स्टूडेंट को कोई महत्वपूर्ण वैज्ञानिक शोध करना हो , विश्व की जानी मानी साइंटफिक मैगजीन में कोई पेपर पब्लिश करवाना हो तो उसके लिए यूनिवर्सिटी में उसके लिए फंड नही है। लेकिन यदि उसे गाय के संवर्द्धन ओर गोबर के इस्तेमाल पर कोई पर कोई शोध करना हो तो फंड धड़ल्ले से उपलब्ध है।

इसलिए समय आ गया है कि अब सविंधान में 'साइंटिफिक टेंपर' के विकास की जगह 'गोबर टेंपर' के विकास को स्थान दिया जाए...मोदी जी जल्द से जल्द इस माँग को पूरा करे...सभी गोबर प्रेमियों की यह हार्दिक इच्छा है।